|| दीक्षानुग्रहप्रपत्रम् ||

|| वन्दे निग्रहकारिणीम् ||

श्रीनाथमचलं नित्यं सर्वज्ञत्वादिकामदम् । वन्दे मूलाधिकारस्थं बोधरूपं जगद्गुरुम् ॥
धर्मसंरक्षणार्थायाधर्मसंहारहेतवे । निग्रहाणाञ्च धर्माज्ञा लोके लोके प्रवर्द्धताम् ॥

शुद्धवैदिकतान्त्रिकवैदिकशुद्धतान्त्रिकवैदिकतान्त्रिकादिचतुःसम्प्रदायपरिधौ वैदिकतान्त्रिकप्रस्थाने श्रीमहोड्डीयानजालन्धरपूर्णागिरिकामरूपान्तर्गतचतुष्पीठेषु मूलाधिकारस्थितेन स्वेच्छया विहरता तिष्ये श्रीकामरूपकामाख्यामहायोनिपीठान्तर्गतेन समस्तप्रकटगुप्ततरसम्प्रदायकुलमहादेशिकेन्द्रेणानिन्द्यानिन्दकनिन्द्यनिन्दक - सर्वदर्शनानिन्दकेन प्रचण्डपाखण्डखण्डकदोर्दण्डमण्डितविषमसमयद्रोहनिग्रहविग्रहेण श्रीमज्जगद्गुरुभगवत्पादाद्यनिग्रहाचार्येणादिनाथेन श्रीनाथेन श्रीमित्रोपाख्येन (श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री) सिद्धनाथेन प्रवर्तिते प्रशस्तसिद्धकौलधर्मान्तर्गत ऊर्ध्वाम्नायविद्यापर्याये शतद्विशततन्त्रोपतन्त्रप्राकारसंस्थितैर्निग्रहागमसञ्चालितेऽव्यक्ताद्वैतसिद्धान्तनिष्ठे पूर्वोत्तराख्योभयकुलप्रभेदे पूर्वकौलाज्ञाधिकारिमण्डले श्रीसमयाख्यया श्रीवक्रामहाकुब्जिकानिग्रहेश्वरीकृपयाज्ञापारमेश्वरीधारकेण हंसवंशावतंसेन कौण्डिन्यायनेन परब्रह्मर्षिगोत्रान्तर्गतमहासाम्राज्याभिषिक्तसद्धर्मसिंहासनस्थितेन श्रीमन्निग्रहाचार्येण श्रीभागवतानन्द(नाथेन)गुरुणा दीक्षानुग्रहार्थं प्रपत्रमेतत् ||

शुद्धवैदिक, तान्त्रिकवैदिक, शुद्धतान्त्रिक एवं वैदिकतान्त्रिकादि चतुःसम्प्रदायों की परिधि में वैदिकतान्त्रिकप्रस्थान में श्रीमहोड्डीयान, जालन्धर, पूर्णागिरि एवं कामरूप के अन्तर्गत चारों पीठों में मूलाधिकार में स्थित हो, स्वेच्छा से विहार करते हुए कलियुग में श्रीकामरूप-कामाख्या महायोनिपीठ के अन्तर्गत समस्त प्रकट एवं गुप्ततर सम्प्रदायकुलों के महागुरुप्रवर, अनिन्द्यजनों के अनिन्दक, निन्द्यजनों के निन्दक, समस्त दर्शनों के अनिन्दक, प्रचण्ड पाखण्ड का खण्डन करने वाली भुजाओं से मण्डित, सम्प्रदायपरम्परा के शास्त्रविरोधी द्रोहियों का निग्रह करने वाले, श्रीमित्र की उपाधि से युक्त श्रीमज्जगद्गुरु भगवत्पाद आद्यनिग्रहाचार्य आदिनाथ श्रीनाथ, श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री सिद्धनाथ के द्वारा प्रवर्तित प्रशस्त सिद्धकौल धर्म के अन्तर्गत ऊर्ध्वाम्नायविद्यापर्याय में एक सौ तन्त्र एवं दो सौ उपतन्त्रों के प्राकार में स्थित निग्रहागम के द्वारा सञ्चालित अव्यक्ताद्वैतसिद्धान्तनिष्ठ, पूर्व एवं उत्तर नामक दो कुलप्रभेदों के अन्तर्गत पूर्वकौल के आज्ञाधिकारिमण्डल में श्रीवक्रा महाकुब्जिका निग्रहेश्वरी की कृपा से आज्ञापारमेश्वरी के धारक, (शाकद्वीपीय) सूर्यवंश के कौण्डिन्यगोत्र में उत्पन्न, परब्रह्मर्षिगोत्र के अन्तर्गत महासाम्राज्याभिषिक्त सद्धर्मसिंहासनस्थित श्रीमन्निग्रहाचार्य श्रीभागवतानन्द(नाथ)गुरु के द्वारा दीक्षानुग्रह प्राप्त करने का यह प्रपत्र है ||

* * * * *

शिष्य परिचय

(सभी विवरण स्वच्छ एवं पठनीय वर्त्तनी में लिखें)

निवेदक का नाम	**निवेदक का चित्र एवं हस्ताक्षर**
वर्तमान पता	
स्थायी (पैतृक) पता	
सम्पर्क का दूरसञ्चार माध्यम	
वर्ण एवं जाति	
पिता का नाम	
माता का नाम	
पितृकुल का गोत्र	
मातृकुल का गोत्र	

माता - पिता का तलाक / पुनर्विवाह/ अन्तर्जातीय / सगोत्रविवाह	
पत्नी / पति का नाम	
पत्नी / पति का तलाक / पुनर्विवाह/ अन्तर्जातीय / सगोत्रविवाह	
पत्नी / पति का गोत्र	
सन्तानों का नाम एवं विवरण	
सन्तानों का तलाक / पुनर्विवाह/ अन्तर्जातीय / सगोत्रविवाह	
सहोदरों की संख्या	
सहोदरों का तलाक / पुनर्विवाह/ अन्तर्जातीय / सगोत्रविवाह	
इससे पूर्व की गुरुदीक्षा का विवरण	
शैक्षणिक योग्यता का विवरण	
कुलदेवता/कुलदेवी की स्थिति का विवरण	
कुलगुरु की स्थिति का विवरण	
आजीविका की स्थिति का विवरण	
जन्मतिथि एवं जन्मस्थान का विवरण	

घर में शुद्ध देशी गोवंश का विवरण (गाय, बैल, बछडा, बच्छिया सभी)	
घर में कुत्ते, बकरी, भैंस आदि अन्य पशुओं का विवरण	
यज्ञोपवीत की स्थिति का विवरण एवं यज्ञोपवीत के समय शारीरिक अवस्था	(मात्र ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य पुरुषों के लिए)
पिता-पितामहादि के यज्ञोपवीत की स्थिति	
मातृकुल के यज्ञोपवीत की स्थिति	
ऐच्छिक व्यभिचार / बलात्कार / समलैङ्गिकता की स्थिति का विवरण	
मदिरापान एवं मांसाहार का विवरण	
किसी प्रकार के व्यसन / नशे की स्थिति	
भ्रूणहत्या की स्थिति का विवरण	
गोहत्या की स्थिति का विवरण	
मनुष्यहत्या की स्थिति का विवरण	
अन्य किसी हत्या के सफल / असफल प्रयास का विवरण	
आत्महत्या के प्रयास का विवरण	
स्वर्ण, रत्न, भूमि, पुस्तक या अन्य बहुमूल्य वस्तु की चोरी का विवरण	
विदेशगमन की स्थिति का विवरण	

किये गये पाप के किसी शास्त्रोक्त प्रायश्चित्त की स्थिति का विवरण	
सन्तानों के द्वारा किए उपर्युक्त किसी पाप एवं प्रायश्चित्त का विवरण	
मन्त्रदीक्षा का नाम	
मन्त्र के देवता का विवरण	
दीक्षा के दिनाङ्क एवं स्थान का विवरण	
दीक्षा का उद्देश्य	
स्वामिश्री निग्रहाचार्य के विषय में कैसे ज्ञात हुआ ?	
दीक्षा के भौतिक साक्षी का नाम (अभिभावक को प्राथमिकता) निवेदक के साथ साक्षी का सम्बन्ध	दीक्षा के भौतिक साक्षी का चित्र, हस्ताक्षर एवं पता
शिष्य क्रमाङ्क	(निवेदन स्वीकृत एवं दीक्षा सम्पन्न होने के बाद)

मैं एतद्द्वारा यह शपथ करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण सर्वथा सत्य एवं पुष्ट हैं जिसमें कोई भी छल नहीं किया गया है | मैं अपने सनातन धर्म के मूल एवं अविकृत प्रारूप के प्रति असन्दिग्ध रूप से श्रद्धावनत हूँ | मैंने 'निग्रहप्रवेशिका' पढ ली है अथवा उससे सम्बन्धित चलचित्र वक्तव्यों को देख लिया है तथा 'शिष्य पाथेय' में वर्णित विषयों को समझने के बाद यह दीक्षा बिना किसी लोभ या कपट के ग्रहण कर रहा हूँ | मैं किसी सकाम भौतिक इच्छा की पूर्त्ति अथवा चमत्कारिक शक्ति सिद्धि हेतु स्वामिश्री

निग्रहाचार्य से हठ नहीं करूंगा एवं इस दीक्षा हेतु मुझसे स्वामिश्री निग्रहाचार्य या उनके किसी अधिकृत प्रतिनिधि/परिकर आदि के द्वारा किसी प्रकार के आर्थिक शुल्क/दान/उपहार आदि की याचना नहीं की गयी है | शिष्यत्व के बाद निम्न स्थितियों में मेरा शिष्यत्व स्वयं निरस्त हो जायेगा तथा उसके लौकिक एवं पारलौकिक परिणामों से स्वामिश्री निग्रहाचार्य का कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा -

- उपर्युक्त प्रपत्र में वर्णित बातों को छिपाने या असत्यभाषण करने पर |
- उपर्युक्त प्रपत्र में वर्णित निषिद्ध कृत्यों को स्वयं या किसी अन्य से करवाने पर तथा उपदिष्ट प्रायश्चित्त न करने की स्थिति में |
- मन्त्र और उससे जुड़े रहस्य अनधिकृत व्यक्ति के समक्ष प्रकाशित करने पर |
- अनुशासनहीन व्यवहार से शास्त्रनिन्दा, देवनिन्दा अथवा आचार्यनिन्दा करने पर |
- गुरु अथवा किसी अन्य शिष्य के साथ कपट एवं पापपूर्ण व्यवहार करने पर |
- तीन बार चेतावनी मिलने पर भी दोष में सुधार न करने पर |
- किसी भी मान्य सनातनी वर्णजातिलिङ्गसम्प्रदायभाषादि के प्रति द्वेषपूर्ण व्यवहार करने पर |
- पाखण्डी जनों का समर्थन, प्रोत्साहन अथवा चाटुकारिता करने पर |
- दीक्षा के समय बताये गये शास्त्रोक्त नियमों की अवहेलना करने पर |
- स्वामिश्री निग्रहाचार्य के स्पष्ट अनुमति एवं समर्थन के बिना उनके किसी अन्य शिष्य से निजी स्तर पर आपत्तिजनक सम्पर्क या योजना में लिप्त रहने पर |
- स्वामिश्री निग्रहाचार्य के स्पष्ट अनुमति एवं समर्थन के बिना उनकी आड़ में कोई विवादास्पद एवं अपुष्ट क्रिया, दुष्प्रचार अथवा वक्तव्य में सम्मिलित होने की स्थिति अथवा अन्य किसी अवर्णित कारण से स्वयं गुरु के द्वारा बहिष्कृत होने पर |

|| यच्छ्रेयस्तदस्तु ||

__***

निवेदक तथा साक्षी के हस्ताक्षर	स्वामिश्री निग्रहाचार्य की मुद्रा एवं हस्ताक्षर

|| अन्य समस्त महत्त्वपूर्ण विवरण यहाँ से आगे अद्यतित किये जायेंगे ||